© Global International Research Thoughts (GIRT)
ISSN: 2347-8861, Volume: 11 Issue: 02, July - December 2023
Accepted on December 12, 2023
DOI : https://doi.org/10.36676/girt.2023-v11i2-02

प्रशिक्षित शिक्षकों की बुद्धिस्तर के सन्दर्भ में उनकी व्यावसायिक प्रतिबद्धता पर प्रभाव का अध्ययन

श्वेता कपूर
शोधकर्त्री
ORCID iD: 0009.0005.2529.9808
Shwetakapoor956@gmail.com

प्रो० (डॉ०) सन्तोष शर्मा
शिक्षा विभाग,
सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ

प्रस्तावना–

शिक्षा का तात्पर्य जीवन में चलने वाली ऐसी प्रक्रिया से है, जो मनुष्य अनुभवों द्वारा प्राप्त करता है। यह प्रक्रिया सीखने के रूप में बचपन से चलती है एवं जीवनपर्यन्त चलती रहती है, जिसके फलस्वरूप मनुष्यों के अनुभवों के भण्डारों में लगातार वृद्धि होती रहती है। यह शिक्षा की प्रक्रिया शिक्षकों के द्वारा सम्पन्न की जाती है और यदि शिक्षक प्रशिक्षित होंगे तो वह अपनी शिक्षण प्रक्रिया सम्बन्धित समस्त जिम्मेदारियों को ओर भी अधिक सचेत होकर पूर्ण करेंगे।

प्रशिक्षित शिक्षकों से आशय उन शिक्षकों से है जिन्होंने शिक्षण कार्य करने हेतु बी0एड0 का प्रशिक्षण कोर्स किया हुआ है तथा इसी कोर्स के आधार पर वर्तमान में किसी माध्यमिक विद्यालय में अध्यापनरत् है। वर्तमान समय में शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारने के लिए तथा छात्रों को सुनहरा भविष्य प्रदान करने के लिए शैक्षिक संस्थानों में प्रशिक्षित शिक्षकों को ही छात्रों को शिक्षित करने के लिए रखा जाता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि शिक्षण एक उच्च पेशेवर गतिविधि है जो विशेष ज्ञान कौशल और व्यवहार की मांग करती है शैक्षिक व्यवसाय में व्यवहारिक कुशलता, प्रदर्शन की योग्यता और यथार्थ क्षमता शामिल है। जोकि समाज में विद्यालय में शिक्षक के व्यक्तित्व को प्रदर्शित करता है शिक्षण पेशे में व्यवसायिक क्षमता मौलिक है, जिसमें कक्षा प्रक्रिया के लिए शिक्षक का ज्ञान तैयारी और छात्रों के व्यक्तित्व के विकास की सुविधा शामिल है। एक प्रशिक्षित योग्य शिक्षक ही बच्चों समाज के विकास में अपना योगदान दे सकता है, इसीलिए कहा गया है कि यदि आप एक शिक्षक को प्रशिक्षित करते हैं तो संपूर्ण समुदाय को शिक्षित करते हैं क्योंकि प्रशिक्षित शिक्षक आगे चलकर योग्य में कुशल शिक्षक बनकर समाज और राष्ट्र के निर्माताओं का निर्माण करते हैं। किसी भी राष्ट्र की प्रगति उसके अध्यापकों की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। क्योंकि बालकों के भविष्य के निर्माण में शिक्षकों की भूमिका सबसे अहम होती है। भारत में अध्यापक शिक्षा का इतिहास उतना ही प्राचीन है जितना कि भारतीय शिक्षा का अध्यापक शिक्षा व्यवस्था का जन्म शिक्षा के साथ ही 25वीं शताब्दी पूर्व हुआ था।

© Global International Research Thoughts (GIRT)
ISSN: 2347-8861, Volume: 11 Issue: 02, July - December 2023
Accepted on December 12, 2023
DOI : https://doi.org/10.36676/girt.2023-v11i2-02

व्यावसायिक प्रतिबद्धता–

किसी भी व्यवसाय में सफल होने के लिए यह आवश्यक है कि व्यक्ति उस व्यवसाय के संदर्भ में उचित योग्यता अभिवृत्ति एवं अभिरुचि व सकारात्मक दृष्टिकोण रखता हो। यही तथ्य शिक्षण व्यवसाय में भी लागू होता है एक शिक्षक की सफलता उसके विषय वस्तु के ज्ञान एवं योग्यताएँ ही नहीं करती बल्कि शिक्षक की शिक्षण कार्य तथा शिक्षण व्यवसाय के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति, अभिरुचि एवं व्यवसायिक प्रतिबद्धता पर भी निर्भर करती है। इस प्रकार व्यवसायिक प्रतिबद्धता से तात्पर्य अपने व्यवसायिक के प्रति समर्पण एवं अपने कार्यों के प्रति वचनबद्धता से है। अपने व्यवसायिक कार्यो के प्रति समर्पित होने की इच्छा शक्ति उसके प्रति विश्वास प्रदर्शित करने की भावना ही व्यवसायिक प्रतिबद्धता होती है। व्यावसायिक प्रतिबद्धता ऐसा शब्द है जिनका प्रयोग व्यावसायिकों की विशेषताओं को प्रकट करने हेतु किया जाता है। इस शब्द का प्रयोग ऐसे व्यावसायिकों के लिए किया जाता है जोकि अपने व्यवसाय को गम्भीरता से लेते हैं। अपने कार्यों के प्रति समर्पित होते हैं। यह शब्द व्यावसायिक प्रतिबद्धता दो शब्दों के मेल से बना है– व्यवसाय तथा प्रतिबद्धता, जिसमें कि व्यवसाय से तात्पर्य किसी कार्य को करने से है जबकि प्रतिबद्धता से तात्पर्य जिस भी कार्य को व्यक्ति कर रहा हो उस कार्य को पूर्ण समर्पण, निष्ठा व गम्भीरता से करना है और उसके प्रति सकारात्मक रूचि रखना है।

व्यावसायिक प्रतिबद्धता की परिभाषाएँ–

जाफरे एवं हांगे के अनुसार– ''वह व्यक्ति जो अपने शिक्षण कार्यों को उन्नत बताना चाहता है और विद्यालयी समय के बाद भी समय देने के लिए तैयार है। वह व्यावसायिक रूप से प्रतिबद्ध कहा जाएगा।''

स्कार्पेलो– ''व्यावसायिक प्रतिबद्धता को किसी व्यावसायिक द्वारा चयनित व्यवसाय या कार्य के क्षेत्र के मूल्यों में विश्वास और उसकी स्वीकार्यता व सदस्यता को बरकरार रखने की इच्छा के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।''

बुद्धि स्तर का प्रत्यय–

बुद्धि शब्द का प्रयोग हम साधारण बोलचाल की भाषा में कई अर्थों में करते हैं उदाहरण के लिए अभिषेक कैसा बुद्धिमान बालक है। अविका गीता से अधिक बुद्धिमान है। इन वाक्यों का विश्लेषण करने पर प्रश्न उठता है कि बुद्धि वास्तव में कोई शक्ति है? क्या इसका संबंध मस्तिष्क से है? क्या यह कोई विकासशील वस्तु है? बुद्धि को अनेक प्रकार से क्यों परिभाषित किया जाता है इन प्रश्नों के उत्तर में कहा जा सकता है कि जिस मानसिक तत्व के कारण बालकों के सीखने की क्षमता में अंतर उपस्थित होता है जिस तत्व के कारण उनकी स्मृति में भिन्नता दिखाई देती

© Global International Research Thoughts (GIRT)
ISSN: 2347-8861, Volume: 11 Issue: 02, July - December 2023
Accepted on December 12, 2023
DOI : https://doi.org/10.36676/girt.2023-v11i2-02

है जिस तत्व के कारण किसी समस्या को हल करने में व्यक्तिक अंतर दिखाई देता है उस कारण को समझने के लिए जो अर्थ हम देते हैं उस अर्थ को ही बुद्धि की संज्ञा दी गई है बुद्धि के अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने के लिए विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने बुद्धि के अनेक परिभाषा दी है जिसमें से कुछ इस प्रकार है–

टरमन के अनुसार बुद्धि की परिभाषा– **"अमूर्त वस्तुओं के संबंध में विचार करने की योग्यता को ही बुद्धि कहते हैं।"**

उद्देश्य–

1. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के पुरूष प्रशिक्षित शिक्षकों की बुद्धि स्तर के सन्दर्भ में उनकी व्यावसायिक प्रतिबद्धता पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन।
2. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के महिला प्रशिक्षित शिक्षकों की बुद्धि स्तर के सन्दर्भ में उनकी व्यावसायिक प्रतिबद्धता पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पनाएँ–

1. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के पुरूष प्रशिक्षित शिक्षकों की बुद्धि स्तर के सन्दर्भ में उनकी व्यावसायिक प्रतिबद्धता पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के महिला प्रशिक्षित शिक्षकों की बुद्धि स्तर के सन्दर्भ में उनकी व्यावसायिक प्रतिबद्धता पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

विधि–

प्रस्तुत शोध को पूर्ण करने के लिए सर्वेक्षण की विश्लेषणात्मक विधि के चरणों का अनुसरण किया गया है।

अभिकल्प–

प्रस्तुत शोध में समस्या की प्रकृति के अनुरूप एकल स्थिर समूह अभिकल्प को चयन किया गया है।

परिसीमन–

1. प्रस्तुत शोध मेरठ जिले से सम्बन्धित है।
2. प्रस्तुत अध्ययन माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के प्रशिक्षित महिला–पुरूष शिक्षकों से सम्बन्धित है।

प्रविधियाँ–

© Global International Research Thoughts (GIRT)
ISSN: 2347-8861, Volume: 11 Issue: 02, July - December 2023
Accepted on December 12, 2023
DOI : https://doi.org/10.36676/girt.2023-v11i2-02

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने आँकड़ों को एकत्रित करने के लिए प्रामाणिक उपकरणों का उपयोग किया गया है।

सांख्यिकी–

समस्या की प्रकृति के अनुरूप उपकरणों द्वारा एकत्रित आँकड़ों के अनुसार उपयुक्त शोध सांख्यिकी जैसे– Means SD, Correlation या T-Test को प्रयुक्त किया जायेगा।

परिणाम–

1. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के पुरुष प्रशिक्षित शिक्षकों की उच्च बुद्धि स्तर का व्यावसायिक प्रतिबद्धता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। सामान्य बुद्धि स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के पुरुष प्रशिक्षित शिक्षकों की बुद्धि स्तर का व्यावसायिक प्रतिबद्धता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। निम्न बुद्धि स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के पुरुष प्रशिक्षित शिक्षकों की बुद्धि स्तर का व्यावसायिक प्रतिबद्धता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। ग्रामीण क्षेत्र के पुरुष शहरी क्षेत्र के पुरुष के तुलना में शिक्षण दक्षता ज्यादा प्रभावित होती है।
2. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के महिला प्रशिक्षित शिक्षकों की उच्च बुद्धि स्तर का व्यावसायिक प्रतिबद्धता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। सामान्य बुद्धि स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के महिला प्रशिक्षित शिक्षकों की बुद्धि स्तर का व्यावसायिक प्रतिबद्धता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। निम्न बुद्धि स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के महिला प्रशिक्षित शिक्षकों की बुद्धि स्तर का व्यावसायिक प्रतिबद्धता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। ग्रामीण क्षेत्र के महिला का शहरी क्षेत्र के महिला के तुलना में व्यावसायिक प्रतिबद्धता ज्यादा प्रभावित होती है।

बुद्धि स्तर के सन्दर्भ में व्यावसायिक प्रतिबद्धता पर प्रभाव का विश्लेषण सम्बन्धी निष्कर्ष–

प्रस्तुत शोध में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के महिला एवं पुरुष प्रशिक्षित शिक्षकों के बुद्धि स्तर के सन्दर्भ में शिक्षण दक्षता व्यावसायिक प्रतिबद्धता पर प्रभाव का विश्लेषण किया गया है। जिसमेबुद्धि के तीन स्तर उच्च, सामान्य एवं निम्न के संदर्भ में शहरी क्षेत्र के पुरुष एवं महिला तथा ग्रामीण क्षेत्र के पुरुष एवं महिला प्रशिक्षित शिक्षकों की बुद्धि स्तर का व्यावसायिक प्रतिबद्धता पर प्रभाव देखा गया है।

शहरी क्षेत्र के पुरुष एवं महिला प्रशिक्षित शिक्षकों के उच्च एवं सामान्य बुद्धि स्तर का व्यावसायिक प्रतिबद्धता पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। लेकिन निम्न बुद्धि स्तर के शहरी क्षेत्र के पुरुष एवं महिला प्रशिक्षित शिक्षकों का व्यावसायिक प्रतिबद्धता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

© Global International Research Thoughts (GIRT)
ISSN: 2347-8861, Volume: 11 Issue: 02, July - December 2023
Accepted on December 12, 2023
DOI : https://doi.org/10.36676/girt.2023-v11i2-02

ग्रामीण क्षेत्र के पुरुष एवं महिला प्रशिक्षित शिक्षकों के उच्च, सामान्य एवं निम्न बुद्धि स्तर का व्यावसायिक प्रतिबद्धता पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के पुरुष प्रशिक्षित शिक्षकों के उच्च सामान्य एवं निम्न, बुद्धि स्तर का व्यावसायिक प्रतिबद्धता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। ग्रामीण क्षेत्र के पुरुष शहरी क्षेत्र के पुरुष के तुलना में व्यावसायिक प्रतिबद्धता ज्यादा प्रभावित होती है।

शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के महिला प्रशिक्षित शिक्षकों के उच्च सामान्य एवं निम्न बुद्धि स्तर का व्यावसायिक प्रतिबद्धता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। ग्रामीण क्षेत्र के महिला का शहरी क्षेत्र के महिला के तुलना में व्यावसायिक प्रतिबद्धता ज्यादा प्रभावित होती है।

शहरी क्षेत्र के पुरुष एवं ग्रामीण क्षेत्र महिला प्रशिक्षित शिक्षकों के उच्च सामान्य एवं निम्न बुद्धि स्तर का व्यावसायिक प्रतिबद्धता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। ग्रामीण क्षेत्र के महिला का शहरी क्षेत्र के पुरुष के तुलना में व्यावसायिक प्रतिबद्धता ज्यादा प्रभावित होती है।

ग्रामीण क्षेत्र के पुरुष एवं शहरी क्षेत्र महिला प्रशिक्षित शिक्षकों के उच्च, सामान्य एवं निम्न बुद्धि स्तर का व्यावसायिक प्रतिबद्धता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। ग्रामीण क्षेत्र के पुरुष का शहरी क्षेत्र महिला, के तुलना में व्यावसायिक प्रतिबद्धता ज्यादा प्रभावित होती है।

© Global International Research Thoughts (GIRT)
ISSN: 2347-8861, Volume: 11 Issue: 02, July - December 2023
Accepted on December 12, 2023
DOI : https://doi.org/10.36676/girt.2023-v11i2-02

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

भटनागर, आर0पी0, शिक्षा अनुसन्धान, लॉयल बुक डिपो, कॉलेज रोड, मेरठ।

त्यागी, गुरसरन दास (2002) भारत में शिक्षा का विकास, विनोद पुस्तक भण्डार, आगरा।

अग्रवाल, जे0सी0 (1991) भारतीय शिक्षा पद्धति संरचना और समस्यायें, आर्य बुक डिपो, दिल्ली।

जौहरी एवं पाठक, भारतीय शिक्षा एवं उसकी समस्याएँ, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

वर्मा, जी0एस0 (2001) आधुनिक भारतीय शिक्षा एवं समस्यायें, लॉयल बुक डिपो, मेरठ।

श्रीनिवास, एम0एन0, आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1975 द्वितीय संस्करण।

रूहेला, सत्यपाल (2003) उभरते भारतीय समाज में शिक्षा, आर्य बुक डिपो, दिल्ली।

Atkinson, J. and Feather, N. (1966). *A theory of achievement motivation*, New York: Wiley and sons.

Buch, M.B. (1991). Fourth survey of research in education 1983-88, (vol.1). New Delhi: NECRT.

Flavell, J. H. and Wellman, H. M. (1977). Meta memory. In V. Kail and J.W. Hagen (Eds), Perspectives on the development of memory and cognition. Hillsdale, NJ: Lawrence Erlbaum

Kabir, S. (2016). Basic guidelines for research: An introductory approach for all disciplines. Book Zone Publication.